नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

खतरनाक है जंग का फिर से भड़कना

अमेरिका और ईरान के बीच फिर भड़का संघर्ष केवल पश्चिम एशिया का संकट नहीं है. इसके बढ़ने का सीधा असर भारत की रसोई से लेकर अर्थव्यवस्था और विदेश नीति तक पड़ सकता है. ईरान के तेल टैंकरों पर हमले, होर्मुज जलडमरूमध्य के आसपास सैन्य तनाव और जवाबी कार्रवाई की धमकियों ने स्थिति को बेहद चिंताजनक बना दिया है. इजरायल-ईरान तनाव के बीच अमेरिका की सक्रिय सैन्य भूमिका ने संघर्ष के विस्तार का खतरा बढ़ा दिया है. भारत के लिए सबसे बड़ी चिंता कच्चे तेल की कीमत है.

भारत अपनी जरूरत के कच्चे तेल का बड़ा हिस्सा आयात करता है और पश्चिम एशिया उसकी ऊर्जा आपूर्ति का महत्वपूर्ण स्रोत है. होर्मुज जलडमरूमध्य में जहाजों की आवाजाही बाधित हुई या टैंकरों का बीमा और परिवहन महंगा हुआ तो अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल के दाम तेजी से बढ़ सकते हैं. इसका असर पेट्रोल-डीजल पर ही नहीं, बल्कि हर उस वस्तु पर पड़ेगा जिसे सड़क, रेल या समुद्री परिवहन से पहुंचाया जाता है. यानी महंगा तेल सीधे महंगाई बढ़ाने का काम करेगा. तेल की कीमत बढ़ने का दूसरा असर रुपए और चालू खाते के घाटे पर पड़ेगा. महंगे तेल के लिए भारत को ज्यादा डॉलर खर्च करने होंगे. इससे डॉलर की मांग बढ़ेगी और रुपए पर दबाव आ सकता है. कमजोर रुपया आयात को और महंगा करेगा. ऐसी स्थिति में सरकार और रिजर्व बैंक के सामने महंगाई तथा आर्थिक वृद्धि के बीच संतुलन बनाए रखने की चुनौती बढ़ेगी.

भारत के लिए समुद्री व्यापार भी बड़ी चिंता है. होर्मुज और आसपास के समुद्री मार्गों में जोखिम बढ़ने पर जहाजों को वैकल्पिक लंबे रास्ते अपनाने पड़ सकते हैं. इससे माल ढुलाई का समय और लागत दोनों बढ़ेंगे. पेट्रोलियम के अलावा रसायन, उर्वरक और दूसरे जरूरी सामानों की आपूर्ति भी प्रभावित हो सकती है. लाल सागर और अदन की खाड़ी में पहले से मौजूद असुरक्षा के बीच नया संकट वैश्विक सप्लाई चेन पर दोहरा दबाव डाल सकता है. एक और गंभीर पहलू खाड़ी देशों में रह रहे भारतीयों की सुरक्षा का है. लाखों भारतीय पश्चिम एशिया के विभिन्न देशों में रोजगार और कारोबार से जुड़े हैं. युद्ध का दायरा बढ़ा तो उनकी सुरक्षा, हवाई संपर्क और जरूरत पड़ने पर बड़े पैमाने पर निकासी भारत के लिए बड़ी चुनौती होगी. खाड़ी देशों से भारत आने वाला धन भी प्रभावित हो सकता है. कूटनीतिक स्तर पर भारत के सामने कठिन संतुलन है. अमेरिका भारत का महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार है, वहीं ईरान से भारत के ऊर्जा, व्यापार और चाबहार बंदरगाह जैसे हित जुड़े हैं. इसलिए भारत को किसी खेमे में खड़े होने के बजाय संवाद और तनाव कम करने की भूमिका को प्राथमिकता देनी चाहिए.

यह संघर्ष जितना लंबा चलेगा, भारत की मुश्किलें उतनी बढ़ेंगी. तेल की कीमत, महंगाई, रुपया, व्यापार और प्रवासी भारतीय—हर मोर्चे पर दबाव बढ़ सकता है. इसलिए भारत के हित में यही है कि युद्ध का विस्तार रोकने के लिए कूटनीतिक प्रयास तेज हों. पश्चिम एशिया में शांति केवल वहां के लोगों की जरूरत नहीं, बल्कि भारत की आर्थिक स्थिरता के लिए भी जरूरी है.

जेन-जी के दौर में राहुल के जातीय प्रयोग पर नजर

प्रवेश कुमार मिश्र

> राजनीतिक प्रेक्षक मान रहे हैं कि कांग्रेस की इस मंडलवादी घेराबंदी के समानांतर भाजपा की सोशल इंजीनियरिंग का काउंटर-मॉडल पारंपरिक जातिगत राजनीति से कहीं अधिक सूक्ष्म और बहुस्तरीय साबित होता दिख रहा है. भाजपा ने केवल सवर्णों को अपने पाले में नहीं रखा, बल्कि हिंदी पट्टी में मंडल राजनीति के बड़े चेहरों के प्रभुत्व से उपजे असंतोष को बहुत चालाकी से पहचानते हुए गैर-यादव ओबीसी और गैर-जाटव अति-दलित जातियों का एक अभूतपूर्व सामाजिक गठबंधन तैयार किया. भाजपा का यह मॉडल सिर्फ सांगठनिक नियुक्तियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे केंद्र सरकार की लक्षित लाभार्थी संस्कृति और कल्याणवादी हिंदुत्व के एक वृहद आवरण से ढका गया है, जो विपक्ष के एकमुश्त पिछड़ा-दलित नैरेटिव को अंदर से खोखला करता दिख रहा है. हालांकि सबकी निगाहें 2029 के आम चुनावों तक लगभग 38 करोड़ की आबादी के साथ सबसे बड़ा मतदाता ब्लॉक बनने वाले युवा पीढ़ी के रूख पर टिकी है.

कांग्रेस पार्टी इन दिनों अपनी पारंपरिक मध्यमार्गी राजनीति से अलग, वैचारिक कायाकल्प के एक बड़े साहसिक और मंडलवादी प्रयोग के साथ आगे बढ़ रही है. पार्टी ने उदयपुर चिंतन शिविर से लेकर रायपुर महाधिवेशन में मंथन के बाद जिसकी जितनी हिस्सेदारी, उसकी उतनी भागीदारी के सिद्धांत को जिस तरह से अपना केंद्रीय एजेंडा घोषित किया है उसके बाद जो बुनियादी सवाल उठ रहे हैं उसके मुताबिक क्या सिर्फ जातीय समीकरणों के इस नए अंकगणितीय प्रयोग से कांग्रेस उस सर्वसमावेशी सामाजिक छतरी को दोबारा पाने में सफल हो पाएगी?

दूसरा बड़ा यक्ष प्रश्न देश की जेन-जी व युवा पीढ़ी का है जो भयावह बेरोजगारी दर के इस दौर में क्या केवल जातिगत अस्मिता के नाम पर लामबंद होकर सत्ता विरोधी लहर के रुख को राहुल गांधी की ओर मोड़ने का जोखिम उठाएगी? इतना ही नहीं, क्षेत्रीय क्षत्रपों की अपनी राजनीतिक जमीन और मोलतोल करने की क्षमता के बीच, क्या जातीय आधार पर दशकों से सियासत करने वाले ये क्षेत्रीय दल राहुल गांधी के इस राष्ट्रीय उभार को अपना पूर्णकालिक और निःशर्त समर्थन दे पाएंगे?

राजनीतिक जानकार बता रहे हैं कि कांग्रेस का यह सांगठनिक और वैचारिक रूपांतरण पिछले तीन से चार वर्षों के गहन आत्ममंथन और लगातार मिली चुनावी शिकस्त का परिणाम है. आजादी के बाद से दशकों तक कांग्रेस सवर्ण-दलित-मुस्लिम के जिस अटूट सामाजिक त्रिकोण के सहारे बढ़ रही थी वह 90 के दशक में मंडल आयोग की सिफारिशें लागू होने और राम मंदिर आंदोलन के उभार के बाद पूरी तरह छिन्न-भिन्न हो गया. जहां एक तरफ उत्तर भारत में क्षेत्रीय दलों ने पिछड़ों-दलितों को अपने पाले में किया वहीं दूसरी ओर पारंपरिक सवर्ण वोटर एकमुश्त होकर भाजपा की तरफ स्थानांतरित हो गया. लेकिन बदलते परिदृश्य में राहुल गांधी ने इसी ऐतिहासिक लाचारी को एक आक्रामक हथियार में बदलने का प्रयास आरंभ किया है. हालांकि आरंभिक तौर पर यह बदलाव एक मायने में बेहद अचूक और पारंपरिक राजनीति से बेहतर साबित हो रहा है, क्योंकि इसने पहली बार भाजपा को रक्षात्मक होने पर मजबूर किया है. कांग्रेस के इस तीखे जातिगत वार की ही काट ढूंढने के लिए भाजपा अब खुद को सिर्फ व्यापक हिंदू पहचान तक सीमित न रखते हुए अब सनातन और उसकी सांस्कृतिक विरासत के विमर्श की बात करने लगी है.

हालांकि, कांग्रेस का यह नया अंकगणितीय प्रयोग जितना कागजों पर अचूक दिखता है, जमीन पर इसकी सीमाएं और असफलताएं उतनी ही मुखर होकर सामने आ रही हैं. बिहार जैसे राज्य में जहाँ से सामाजिक न्याय की राजनीति का पुनर्जन्म हुआ, वहाँ कांग्रेस की यह रणनीति पूरी तरह विफल साबित हुई. इतना ही नहीं मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ के बाद हरियाणा, महाराष्ट्र, पंजाब जैसे राज्यों के बाद 2025 में हुए बिहार विधानसभा चुनावों में भी ओबीसी और दलित-केंद्रित कार्ड खेलने के बावजूद कांग्रेस को अपनी उम्मीद के मुताबिक परिणाम हासिल नहीं हुए. बावजूद इसके सबसे दिलचस्प विरोधाभास उत्तर प्रदेश में देखने को मिल रहा है जहाँ कांग्रेस आक्रामक रूप से पिछड़ों और दलितों को रिझाने में जुटी है, जबकि वहां पहले से ही मौजूद क्षेत्रीय क्षत्रप सपा अपनी पीडीए यानी पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक की स्थापित रणनीति को और धार देते हुए अब उसमें सवर्णों विशेषकर ब्राह्मणों को जोड़ने के नए प्रयोग कर रहे हैं. ऐसे में राहुल गांधी का यह अभियान राजनीतिक तौर पर आंशिक रूप से सार्थक जरूर रहा है क्योंकि इस प्रयोग ने कांग्रेस को पिछले एक दशक के राजनीतिक अवसाद और सांगठनिक शिथिलता से बाहर निकाला है. लेकिन केवल जातिगत गोलबंदी के भरोसे पूर्ण बहुमत की राह आसान नहीं दिख रही है. इस स्थिति में कांग्रेस के लिए भविष्य की असली चुनौती अपने इस नए सोशल इंजीनियरिंग के अंकगणित के साथ-साथ आर्थिक प्रगति, आधुनिक रोजगार और एक मजबूत राष्ट्रवाद का ऐसा सर्वसमावेशी व आधुनिक मॉडल भी पेश करने का होगा जो हिंदी पट्टी के सवर्णों, मध्यम वर्ग और युवाओं को यह भरोसा दिलाना होगा कि वह एक विकसित और समतामूलक भारत के निर्माण का वास्तविक रोडमैप रखती है.

महाकौशल की डायरी

नाकाम अधिकारी-कर्मचारियों का पुनर्वास केंद्र बना जबलपुर...

अविनाश दीक्षित

मध्य प्रदेश के छोटे जिलों में जिन अधिकारी कर्मचारियों को विभाग ने विदाई दे दी थी उन पर राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन मेहरबान नजर आ रहा है. राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अफसरों ने जबलपुर के स्वास्थ्य विभाग को पुनर्वास केंद्र मान लिया है. आलम यह है कि मंडला, कटनी, डिंडोरी, बालाघाट जैसे छोटे जिलों की स्वास्थ्य व्यवस्थाएं सम्हाल पाने में नाकाम रहने वाले कर्मियों को जबलपुर अटैच कर दिया गया है. इन अधिकारी- कर्मचारियों के जबलपुर में आने के बाद स्वास्थ्य विभाग में कई चर्चाएं शुरू हो गई हैं. विभागीय गलियारों में हो रहीं खुसरफुसर के मुताबिक पुराने अधिकारी नये कर्मियों के आने से असहजता महसूस कर रहे हैं, जिसका असर विभागीय कार्य में स्पष्ट रूप से नजर आने लगा है.

विदित रहे कि जबलपुर की स्वास्थ्य सेवाएं पहले से ही लचर हैं और इन परिस्थितियों के बीच निठल्ले अधिकारी कर्मचारियों की जबलपुर में तैनाती को स्वास्थ्य सिस्टम को और भी बिगाड़ने वाला माना जा रहा है और जिसका खामियाजा सिर्फ जनता ही भुगतने वाली है. एक ओर शहर की स्वास्थ्य सेवाओं को पटरी पर लाने में कुछ अफसर जुटे हुए हैं तो दूसरी तरफ इन बेकाम के अधिकारी

कर्मचारियों से काम करवाने की चुनौती विभाग के समक्ष खड़ी हो गई है. वहीं स्वास्थ्य विभाग के कुछ अफसर शासन के शीर्ष अफसरों को कोसते हुए भी नजर आने लगे हैं.

कलेक्टर के फरमान भी हाशिए पर..

गेहूं, धान खरीदी में व्यापक भ्रष्टाचार की सुर्खियां अब नई बात नहीं रह गई हैं लेकिन इससे जुड़े प्रकरणों की जांच में आरोपी बने लोगों पर जिला कलेक्टर के निर्देश के बाद भी कार्रवाई हाशिए पर पड़ी रहे तो यह सरकारी सिस्टम की शर्मनाक सच्चाई उजागर करने वाला है. मामला जबलपुर के मझौली के अन्नपूर्णा वेयरहाउस से जुड़ा है, जहां 5 हजार से अधिक क्विंटल गेंहूं उपार्जन के फर्जीवाड़े मामले में 13 लाख 90 हजार की वसूली के लिए मझौली तहसीलदार द्वारा 10 आरोपियों के खिलाफ कुर्की वारंट जारी नहीं किया जा रहा है.

चर्चाएं हैं कि राजनैतिक संरक्षण के चलते घोटालेबाजों का समूह अभी तक बचता रहा है. जबकि कलेक्टर ने तहसीलदार को निर्देश दे दिए हैं कि वे कुर्की वारंट जारी कर दोषियों से गड़बड़ी की राशि वसूल करें.

8 करोड़ के धान घोटालेबाज पर भी मेहरबानी..

एक अन्य मामला उमरिया जिले का है जहां नागरिक आपूर्ति निगम और खाद्य विभाग की कार्यप्रणाली ने भ्रष्टाचार का एक नया और शर्मनाक इतिहास रच दिया है. करीब 8 करोड़ के बहुचर्चित धान गबन कांड में आरोपी राइस मिलर की ढाल बनकर नागरिक आपूर्ति निगम के अफसर खड़े नजर आ रहे हैं. यह मामला उमरिया जिले की मानपुर तहसील के सेहरा बस्कुटा स्थित डी. के. राइस मिल से जुड़ा है, जहां आपराधिक प्रकरण दर्ज करने के साफ आदेशों के बावजूद एफआईअर दर्ज नहीं हो सकी है. जबकि जांच में साफ हो चुका है कि मिल के गोदामों से 6,845 क्विंटल सरकारी धान पूरी तरह नदारद था. इसी भारी-भरकम गबन पर पर्दा डालने की नीयत से अग्निकांड की झूठी कहानी भी गढ़ी गई थी. हालांकि गड़बड़ी उजागर होने के बाद कलेक्टर ने कड़ा रूख अपनाते हुए न्यूनतम समर्थन मूल्य का पांच गुना जुर्माना ठोंका और 11, 845 रुपये प्रति क्विंटल की दर से रिकवरी का आदेश सुनाया. कुल मिलाकर लगभग 8 करोड़ रुपये की देनदारी तय की गई. इसके साथ ही गबन के आरोपी मिल मालिक के विरुद्ध तत्काल कानूनी कार्रवाई करते हुए प्राथमिकी दर्ज कराने का सख्त हुक्म जारी किया गया था. आदेश जारी हुए लगभग 15 दिन हो चुके हैं मगर एफआईआर दर्ज नहीं हो सकी है. खबर है कि नागरिक आपूर्ति निगम और खाद्य आपूर्ति विभाग की बागडोर एक ही अधिकारी के हाथों में होने के चलते इस विशाल घोटाले को ठंडे बस्ते में डालने की पुरजोर कोशिशें हो रहीं हैं. सवाल यह भी खड़े हो रहे हैं कि यदि जिला स्तर के सबसे बड़े पद से जारी आदेशों की भी इस तरह खुलेआम अनदेखी की जाएगी, तो आम जनता का प्रशासनिक तंत्र पर कब तक विश्वास बना रहेगा. देखना यह होगा कि जिला प्रशासन इस संगठित भ्रष्टाचार पर कब चाबुक चलाता है या फिर यह 8 करोड़ का धान गबन का मामला भी सरकारी कागजों के ढेर में हमेशा के लिए दफन होकर रह जाएगा.

जानलेवा होती जा रही हैं जर्जर इमारतें

यह बेहद चौंकाने वाली बात है कि 2020 से 2024 के बीच 7,874 लोगों की मकान ढहने से मौत हुई. 2025 के 8 महीने में मकान गिरने की 20 घटनाओं में 70 लोगों की प्राणहानि हुई. इसे देखते हुए मजबूत और सुरक्षित मकानों के निर्माण की आवश्यकता है. दिल्ली में पेईंग गेस्ट के रूप में छात्रों को रखने वाली 5 मंजिला इमारत सत्य निकेतन के 6 सितंबर को भरभरा कर ढह जाने से 7 लोगों की मौत हो गई. इस पर सुप्रीम कोर्ट ने इसे गंभीर मामला बताते हुए कहा कि पूरे देश में अवैध होस्टल की जांच की जानी चाहिए तथा वह सत्य निकेतन मामले को दिल्ली हाईकोर्ट से अपने पास ट्रांसफर करने पर विचार कर रहा है. दिल्ली का वह मकान 50 वर्ष पुराना था जो लोड बेस्ड था. उसमें पिलर नहीं थे. इतने पर भी उसके बेसमेंट में दुरुस्ती व खुदाई का काम चल रहा था. किसी पुरानी इमारत में खुदाई करना दीवारें हटाना, ड्रेनेज में परिवर्तन करना असंतुलन ला सकता है. ऐसा कोई भी काम सक्षम सिविल इंजीनियर की देखरेख व नगर निगम की अनुमति से ही होना चाहिए. घनी बस्ती में एक बिल्डिंग गिरने से आसपास के मकानों व लोगों के लिए भी खतरा हो सकता है. भारत में राष्ट्रीय भवन सुरक्षा नीति व कार्यक्रम की आवश्यकता है. कितने ही मकान 100 वर्ष से भी पुराने हैं. आखिर इंसान के समान मकान की भी तो आयु होती है. गर्मी, ठंड, बरसात झेलते हुए मकान भी कमजोर हो जाता है. स्कूल, छात्रावास, अस्पताल, थिएटर, बाजार की पुरानी इमारतों की सुरक्षा पर खास ध्यान देना जरूरी है क्योंकि इनके ढहने से अनेक लोगों की जिंदगी खतरे में पड़ सकती है. इमारत में पड़ने वाली दरारें, पानी का रिसाव, अवैध फेरबदल खतरे को बढ़ाते हैं. इमारत के निर्माण में यदि घटिया सामग्री का इस्तेमाल किया गया हो, कम मोटाई की सलाखों से ऊंची बिल्डिंग बनी हो तो भी वह गिर सकती है. बारिश के मौसम में ऐसी आशंका और बढ़ जाती है. इमारत की सही तरीके से देखरेख या मेंटेनेंस भी जरूरी है. जो मकान असुरक्षित या खतरनाक स्थिति में नजर आए, वहां रहने वालों को तुरंत उसे छोड़ देना चाहिए.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

कांग्रेस में गुटबाजी की हलचल, ऐसे में क्या कर पाएंगे राहुल

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, बीजेपी कितनी अनुशासित पार्टी है. वहां नेतृत्व का निर्देश सभी आंख मूंदकर मानते हैं. कहीं कोई मतभेद या बहस नहीं! सारे भक्त श्रद्धाभाव से नमो नमो जपते हैं. गोदी मीडिया आरती उतारने में लगा रहता है. पार्टी का अनुशासन इतना है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कह दिया कि अब से भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन मेरे बॉस हैं. कांग्रेस को इससे कुछ सीखना चाहिए.'

हमने कहा, 'कांग्रेस में आंतरिक लोकतंत्र और स्वतंत्र अभिव्यक्ति है. राज्यों में उसके जुझारू नेताओं की आपस में खटपट चलती रहती है. कांग्रेस के नेताओं के सुर और ताल में विविधता की झलक है जबकि बीजेपी का एक ही ऑर्केस्ट्रा है, जिसे पार्टी के सभी लोग आंख मूंदकर सुनते हैं. आपने फिल्म राम-लखन का गीत सुना होगा- ए जी, ओ जी, लो जी, सुनो जी, करता हूं मैं वो तुम भी करो जी, वन टू का फोर, फोर टू का वन, माई नेम इस लखन! यही स्थिति जीडीपी की दर को लेकर है. सरकार इसे 7.8 फीसदी

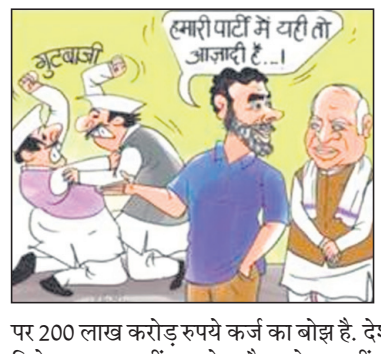

बताती है जबकि आलोचक अपने अनुमान से इसे 2.6 प्रतिशत बताते हैं. हकीकत यह है कि देश पर 200 लाख करोड़ रुपये कर्ज का बोझ है. देशवासियों को विदेश यात्रा नहीं करने और सोना नहीं खरीदने का हितोपदेश दिया जा रहा है. मीडिया की आजादी की यह हालत है कि 180 देशों की सूची में भारत 159 वें स्थान पर है. पेट्रोल इथेनॉल मिलाने के बाद भी काफी ऊंचे दाम पर बेचा जा रहा है. महंगाई की मार से घरों का बजट चौपट हो चुका है. युवा बेरोजगारी चरम पर है. शिक्षा व्यवस्था को पेपरलीक के अजगर ने जकड़ लिया है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, इस तरह की फालतू बातें उनको सूझती हैं जो दिमागी नक्सल हैं. आप इस बात से फूलकर कुप्पा हो जाइए कि ईरान युद्ध तथा रूस-यूक्रेन युद्ध जैसी प्रतिकूल स्थितियों के बावजूद देश की जीडीपी ग्रोथ 7.8 प्रतिशत है. यह कितना बड़ा जादू है. इतना याद रखिए कि बाज की नजर, चीते की चाल, बाजीराव की तलवार और मोदी के मन की बात पर संशय नहीं किया करते.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, पंजाब में चरणजीत सिंह चन्नी खुद को सीएम पद का चेहरा बताते हैं लेकिन प्रताप सिंह बाजवा सामूहिक नेतृत्व के पक्ष में हैं. उत्तराखंड के कांग्रेस नेताओं में भी वर्चस्व की लड़ाई है. गुजरात में जिग्नेश मेवाणी और किरीट पटेल में प्रतिस्पर्धा है. गोवा के पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अमित पाटकर ने थर्ड फ्रंट बना लिया है. यूपी में कांग्रेस का एक गुट सपा से तो दूसरा बसपा से गठबंधन की बात करता है.' हमने कहा, 'यही तो कांग्रेस की वैचारिक स्वतंत्रता है. आगे क्या करना है, राहुल देखेंगे.'

शब्द-सागर 12376

- डॉ. सागर खादीवाला

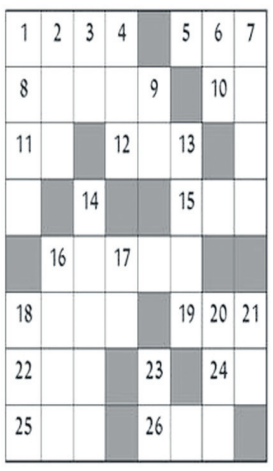

बाएं से दाएं
1. स्नान के पूर्व शरीर पर लगाया जाने वाला एक प्रकार का लेप 5. बदमाश, गुंडा, बहुत बनाव सिंगार करने वाला 8.जल में डूबकर प्राण त्यागना, किसी वस्तु का जल में डूबकर नष्ट होना 10. उत्सर्ग, कोई बात, काम या संबंध छोड़ने की क्रिया 11. तीतर की जाति का एक छोटा पक्षी 12. दुष्प्राप्य, बहुत बढ़िया (उर्दू) 15. संधि, दरज 16. तड़पड़ाना, तोड़ने के समान शब्द करना, घी आदि में बिल्कुल तर करना 18. कृतज्ञता, उपकार 19. मछली पकड़ने वाला, धीवर 22. घेरा, मंडल, चूड़ी 24. अंधकार, अंधेरा, पाप (सं.) 25. दान, खैरात, कर महसूल 26. खेतों में सिंचाई के लिए बनाई जाने वाली छोटी नाली, मोर

ऊपर से नीचे
1. शीघ्रता 2. दंगा, हुल्लड़, विद्रोह 3. भारी वस्तु के सरकने का शब्द 4. झुकाना, झुकाकर या दबाकर अधीन करना 6. मार डालने की क्रिया, खून 7. दाग या धब्बे वाला 9. पुत्री, बलिका 13. जिसकी लोग निंदा करते हो 14. शुभ घड़ी या मुहूर्त, जेठ बदी अमावस 16. धूम, हलचल 17. शरीर, देह 18. प्रतिफल, परिवर्तन, बदले में काम करने वाला व्यक्ति 20. संक्रामक, छूत वाला 21. साधारण, जनता का, एक प्रसिद्ध फल 23. ओष्ठ, होठ (उर्दू)

Solution 12375

अ	नु	च	र			प	ग
व		ट्ठा		म	हा	व	र
रो	श	न	दा	न		न	द
ध	नि			मो	क्ष		न
	वा	स	गृ	ह		सु	
ते	र	ह		न	व	नी	त
ग		म	द		र	ति	क
	अ	ना	व	र	ण		ली

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त होगी. आकस्मिक धन लाभ का योग है. वर्ष के मध्य में व्यापार में लाभ होगा. शासन सत्ता का सुख मिलेगा. वर्ष के अन्त में शारीरिक कष्ट रहेगा. मित्रों से व्यर्थ वाद विवाद हो सकता है. स्थानान्तरण का योग है. मानसिक तनाव में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा. मित्रों से व्यर्थ वाद विवाद हो सकता है, सावधानी बांछनीय. कर्क राशि के व्यक्तियों को आकस्मिक धन लाभ का योग है. स्थान परिवर्तन हो सकता है. सिंह राशि के व्यक्तियों को राजकीय सहयोग रहेगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को नवीन योजनाओं का लाभ मिलेगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को स्थानीय सहायता प्राप्त होगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को लाभदायक समय प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक लगनशील स्वाभिमानी तथा सुन्दर कर्मठ, दूसरों के प्रति सहृदयता एवं उदारता से व्यवहार करेगा. स्पष्टवादी होगा. अपने कार्यों को सहर्ष स्वयं करेगा. इसके मित्रों की संख्या सीमित होगी. यात्रा और मनोरंजन का शौकीन होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

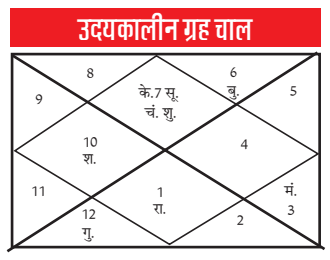

पंचांग

रा.मि. 20 संवत् 2083 भाद्रपद कृष्ण अमावस्या भृगुवासरे दिन 8/38, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रे दिन 2/10, साध्य योगे रात 7/1, नाग करणे सू.उ. 5/51, सू.अ. 6/9, चन्द्रचार सिंह रात 8/8 से कन्या, पर्व- स्नानदान अमावस्या, शु.रा. 5,7,8,11,12,3 अ.रा. 6,9,10,1,2,4 शुभांक-7,9,3.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद कृष्ण अमावस्या को पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के प्रभाव से वनस्पति तेल, सरसों, अरंडी, के भाव में तेजी का रूख रहेगा. गेहूँ, सोना, चांदी, के भाव में सामान्य स्थिति रहेगी. सोना, चांदी लोहा के भाव में उतार चढाव आयेगा. भाग्यांक 1507 है.

मेष- रोजगार की तरफ प्रयास करें, सफलता मिलेगी. पारिवारिक में उत्साह बना रहेगा. अनावश्यक विवादों को न बढ़ायें. उपहार मिलेगा.

वृषभ- रचनात्मक प्रयास सार्थक होगा. मांगलिक कार्यो पर अंतिम विचार होगा. पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. पद प्रतिष्ठा बनी रहेगी.

मिथुन- पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. कामकाज की अधिकता रहेगी. परिजनों का सहयोग रहेगा. निजी कामकाज बनने का योग प्रबल है.

कर्क- कोई ऐसा कार्य बनेगा, जिससे आपको संतोष रहेगा. महिला जाति की सलाह उपयोगी रहेगी. मान प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त होगा.

सिंह- मनोरंजन तथा धार्मिक स्थल की सैर होगी. किसी अभिन्न मित्र से भेंट होगी. सामाजिक कार्यों में वृद्धि होने का योग प्रबल है. यश मिलेगा.

कन्या- स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें. खानपान पर नियंत्रण रखकर कार्य करें. मधुरता और साहसिक कार्यों में वृद्धि होगी. नियमितता बनी रहेगी.

तुला- व्यवसायिक मामलों में जोखिम से बचने का प्रयास करें. रक्त विकार या नेत्र पीड़ा हो सकती है. विवादित मामलों को न बढ़ायें. सुख रहेगा.

वृश्चिक- जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा. अनचाही यात्रा से बचें. उठाईगीरों से सावधान रहें. आपके कार्यो में परिश्रम अधिक करना होगा.

धनु- कुछ मानसिक तनाव रह सकता है. व्यर्थ के वाद विवाद से बचें. मन मुताबिक प्रस्ताव प्राप्त होने से मानसिक प्रसन्नता का योग प्रबल है.

मकर- लंबी दूरी की यात्रा का योग है. किसी नवीन योजनाओं का विचार गंभीरता से होगा. व्ययभार अधिक होगा. लाभ सामान्य रहेगा.

कुम्भ- आर्थिक मामलों में प्रगति होगी. संयम से कार्य करना हितकर रहेगा. पारिवारिक कार्यो में संलग्नता रहेगी. अतिथि आगमन का योग है.

मीन- पुराने आर्थिक मामलों में प्रगति होगी. धैर्य से कार्य करें. मैत्री संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी. सामान्य प्रतिष्ठा वृद्धि होगी. शुभ सूचना मिलेगी.

SUDOKU 7508

3	9				1			
5	4			6	8		1	3
		1		7		9	5	
	8	9		5	3		4	7
6	1		4	9		2	3	
	3	4		1		8		
7	5		8	3			2	4
			6				7	9

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7507

9	6	2	3	4	1	7	5	8
1	4	8	9	7	5	6	2	3
5	7	3	2	6	8	1	4	9
3	2	1	6	9	4	8	7	5
4	8	7	5	1	2	9	3	6
6	9	5	8	3	7	4	1	2
8	3	4	7	2	6	5	9	1
2	1	6	4	5	9	3	8	7
7	5	9	1	8	3	2	6	4